3-2-68

रात्रीक्लास ओमशान्ति शिव बाबा याद है। 3-2-68

भभके पर भी मनुष्य खेंचते हैं। बड़े2 सेन्टर्स पर ऐसे भभका करते हैं जो मनुष्य खेंच कर आवे। है तो प्रीं। ऐसे भी नहीं छोटे2 बच्चे भी अन्दर घूस पड़े। वह भी सम्भाल रखनी है। आजकल शरावी-कबावी तो बहुत हैं ना। सरकारी म्युज़ियम में तो कोई भी जाते हैं। यह है पवित्र चित्र। यह तो जैसे कि मंदिर है। कोई गन्दा अन्दर न आवे। यह भी आगे चल कर प्रबन्ध करना होगा। पूछा जावेगा स्नान किया है? नही तो जा नहीं सकते। पवित्र ही जाये सके। बहुत ऐसे भी मनुष्य होते हैं जो लैट्रीन कर स्नान भी नहीं करते हैं। वह समय आवे गा खास कर इस जगह (आबू मधुवन की हाल में) पतित को अला नहीं करेंगे। और सेन्टर्स पर तो पतितों को जाना पड़े। यहां के लिए ऐसा प्रबन्ध किया जावेगा कोई भी पतित घुस न सके। वास्तव में तुम बच्चे सारे विश्व को पवित्र बनाते हो योगबल से। कितना बच्चों को नशा चढ़ना चाहिए। मूल बात है पवित्रता की। पवित्रता की बात पर मंदिर याद आते हैं, पढ़ाई की बात पर कालेज याद आते हैं। यह तो है। चित्रों पर पढ़ाया जाता है। बच्चों को खयाल आना चाहिए हम श्रीमत पर चल रहे हैं। स्वच्छ भी रहना है। अन्दर में भी कोई बात न रहनी चाहिए। बच्चों को समझाया जाता है अशरीरी भव। यहां पार्ट बजाने आये हो। अविनाशी पार्ट है जो बजाते ही रहते हैं। जो भी हैं सभी को अपना पार्ट बजाना है। यह नालेज बुधि में रहनी चाहिए। किसको भी समझाये सकते हो। इसमें लज्जा की बात नहीं। सीढ़ी पर तुम किसको भी समझाये सकते हो। रावण राज्य है हो पतित, रामराज्य है पावन। फिर पतित से पावन कैसे बने। ऐसी2 बातों पर रमण करना चाहिए। इसको ही विचार सागर मथन कहा जाता है। 84 का चक्र याद आना चाहिए। यह तो बहुत सहज है। बाप ने कहा है मुझे याद करो। यह है रूहानी यात्रा। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। उन जिसमानी यात्रा से तो और ही विकर्म बनते हैं। कुछ न कुछ सर्विस करनी चाहिए। बोलो यह तावीज़ है इनको समझते रहेंगे तो सभी दुःख दूर हो जायेंगे। पहनते ही हैं ब्रह्मचारी या बिमारी के लिए। याद की यात्रा तुम्हारी आत्मा व्यापार कर रही है। याद से ही कमाई होगी। अभी तो मौत सामने खड़ी है। तो पढ़ाई में पूरा अटेन्शन देने में ही बच्चों का कल्याण है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का याद-प्यार गुडनाइट। पाईन्ट्सः- बच्चों को यह तो निश्चय है बाप ने हमको अनेक बार मनुष्य से देवता बनाया है यह भी बुधि में तो भी अहो सौभाग्य। यह बेहद का बड़ा स्कूल है। वह होता है हद का छोटा। बाप को तो बहुत तरस पड़ता है कैसे समझाऊं। कोई2 से तो भूत निकलता ही नहीं हैं। दिल पर चढ़ने बदली और ही गिर पड़ते हैं। कोई बच्चियां तो तैयार हो रही हैं अनेकों का कल्याण करने। कोई तो फिर अकल्याण भी करते हैं। कल्याण नहीं तो अकल्याण ही करते हैं। यहां तो वातावरण भी ज्ञान का चलना है बाकी बन्दा। याद की यात्रा में जो रहते हैं तो दूसरों को भी सिखलाना पड़े। ज्ञान है तो दूसरों को भी देना पड़े। याद की यात्रा तो सेकन्ड में किसको समझाये सकते हैं। यह समझ जायें तो स्वर्ग में चले जायें। ट्रेन में भी तुमको बहुत मिलते हैं। बैज से तुम किसकी भी सर्विस कर विश्व का मालिक बनाये सकते हो। यह बेहद का बाप है उन से यह वर्सा मिलता है। बाप को जानने से तुम पवित्र बन मुक्तिधाम चले जावेंगे। कल्प2 जो पढ़ते आये हैं वही पढ़ेंगे। इसमें फर्क नहीं पड़ता। तुम कहेंगे कल्प बाद भी हम यही ज्ञान सुनेंगे। यह भी टैव पड़ जानी चाहिए। एक जन्म के पाप तो लिख कर देते हैं तो कुछ हल्का हो जाये। परन्तु जन्म-जन्मान्तर के पापों का कैसे मालूम पड़े। वह कैसे हल्का होगा। इसके लिए फिर योग चाहिए। हम जन्म-जन्मान्तर के पापी अजामिल है। खयाल करना चाहिए जन्म-जन्मान्तर के पाप कैसे कटेंगे। इतना बोझा उतरने में टाईम लगता है। बैटरी का ओना बहुत रहना चाहिए। पतितों से पुण्यात्मा तो बने। ओम

हलो मीठी2 आत्माएं, बाप-दादा साथ मधुवन निवासी, सभी आत्माओं को का दिलवर जान सिक व प्रेम से याद प्यार स्वीकार करना जी। अच्छा अब विदाई लेते हैं।